Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024
ISSN: 2347-2979

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति का अध्ययन

प्रयाग माधव झा
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ अमित कुमार
शोध निदेशक, सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, बी०एम०ए० कॉलेज, बहेड़ी, दरभंगा

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके छात्रों पर निर्भर करता है। छात्रों के चरित्र-निर्माण तथा व्यक्तित्व को उचित आकार देने में नैतिक मूल्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मूल्य व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र को बनाने में सर्वाधिक भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति का व्यवहार तथा उसका चरित्र काफी हद तक उसके मूल्यों पर निर्भर करता है। एक विद्यार्थी का व्यवहार तथा चरित्र-निर्माण विद्यालय के वातावरण पर निर्भर करता है। विद्यालय वातावरण से तात्पर्य उन परिस्थितियों से है जो अध्यापक, शिक्षण अधिगम सामग्री एवं शिक्षण विधियों से उत्पन्न होती है तथा जिसका सापेक्षिक प्रभाव विद्यार्थियों की ज्ञानेंद्रियों एवं मस्तिष्क पर पड़ता है। इसके फलस्वरूप विद्यार्थियों का व्यवहार नियंत्रित होता है।

तत्कालीन शिक्षा केवल विषयों की शिक्षा एवं परीक्षा तक ही सिमटी हुई है। यदि हम कहें कि वर्तमान शिक्षा का स्वरूप एकांकी है तो यह कहना गलत नहीं होगा। नैतिक मूल्यों के विकास पर ही व्यक्ति का संपूर्ण आंतरिक विकास निर्भर करता है ।नैतिक मूल्यों का संबंध नैतिकता से है । नैतिकता से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा एक परिवार की आंतरिक प्रेरणा और दिशा-निर्देशन में अपनी इच्छा और मन पर नियंत्रण और पूर्ण अधिकार का सतत् प्रयास किया जाना है। वैसे तो बालक जन्म से ही माता-पिता के संपर्क में बहुत से नैतिक मूल्यों का अनुकरण करता है और उसे सीखता है, किंतु कभी-कभी माता-पिता के द्वारा ही अनुशासनहीनता को बढ़ावा दिया जाता है। इस स्थिति में विद्यालय शिक्षा का उत्तरदायित्व इस दिशा में और भी अधिक हो जाता है।

अतः इसके प्रमुख घटकों, पाठ्यक्रम एवं शिक्षक के माध्यम से ऐसा वातावरण निर्मित किया जाए जिससे छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास हो सके। पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा से संबंधित विषयवस्तु का समावेश तो होना ही चाहिए साथ ही पाठसहगामी क्रियाओं में भी नैतिक मूल्यों पर आधारित क्रियाकलाप शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षकों को नैतिक शिक्षा प्रदान करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन में नैतिक मूल्यों को अपने व्यवहार में परिलक्षित करें तथा यह उनमें आत्मानुशासन विकसित कर सके। इसके लिए शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों को समय-समय पर इस तरह के अवसर भी प्रदान करना चाहिए। विद्यार्थी अपनी जिम्मेदारियों को दूसरे पर थोपने तथा जैसे-तैसे कार्य को पूरा करने के बजाय मन लगाकर अच्छे से अपने कार्य को पूरा करें, इसके लिए भी बच्चों को प्रेरित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों के द्वारा नीतिपरक कार्य करने पर शिक्षक स्वयं तथा अन्य बच्चों के द्वारा उसकी प्रशंसा करें जिससे कि उसका उत्साहवर्धन हो सके तथा अन्य बच्चे भी अच्छे कार्यों के लिए दूसरे की प्रशंसा करना सीख सके।

ISSN: 2347-2979

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व:-

वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक शिक्षा की एक जटिल समस्या छात्रों में अनुशासनहीनता की है इसके लिए केवल छात्र ही दोषी नहीं है बल्कि कई शैक्षिक तथा सामाजिक कारण उत्तरदायी हैं जैसे दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन, छात्रों के प्रति अभिभावकों की उदासीनता, कामोद्दीपक चलचित्र, अश्लील गीत इत्यादि । इन सभी कारणों के फलस्वरुप छात्रों में अनुशासनहीनता इतनी तीव्र गति से बढ़ रही है कि छात्रों का अपना भविष्य तो खराब हो ही रहा है साथ ही वह समाज एवं राष्ट्र के माथे पर कलंक की कालिमा को अधिक गहरा करता चला जा रहा है । यदि इस समस्या का समाधान तुरंत नहीं किया गया तो यह असाध्य रोग बनकर हमारे राष्ट्र के लिए दारुण दुःख का कारण बनेगा तथा इससे भारत जैसे देश का नैतिक पतन भी हो सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

प्रयुक्त उपकरण एवं शोध विधि:-

प्रस्तुत शोध की समस्या के समाधान हेतु शोधार्थी ने स्वनिर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग शोध उपकरण के रूप में किया। इसकी वैधता एवं विश्वसनीयता के लिए स्वनिर्मित मूल्य मापनी को विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया गया तथा विशेषज्ञों की राय के अनुसार इसका निर्माण किया गया। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर आंकड़ों को संग्रहित किया गया तथा आंकड़ों के आधार पर वर्णन एवं विश्लेषण किया गया तथा इसी के आधार पर प्रमुख निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया।

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या एवं न्यादर्श:-

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या बिहार राज्य के बेगूसराय जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत समस्त छात्र एवं छात्राएं हैं। इसके न्यादर्श के लिए बेगूसराय जिले के दो सरकारी तथा दो गैर-सरकारी

विद्यालयों का चयन कर इन विद्यालयों से यादृच्छिक विधि से 60 छात्राओं एवं 60 छात्रों (प्रत्येक विद्यालय से 15-15 छात्राओं एवं छात्रों) का चयन किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण:-

प्रस्तुत शोध के न्यादर्शों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण उद्देश्यों के आधार पर इस प्रकार है-

उद्देश्य-1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
निष्कर्ष:- शोध के इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बेगूसराय जिले के दो सरकारी विद्यालयों से 30 छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति का अध्ययन किया गया तथा दो गैर सरकारी विद्यालयों से भी 30 छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति का अध्ययन किया गया। जिसमें सरकारी विद्यालयों के 70% छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति उच्च पाई गई तथा 30% छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति निम्न पाई गई। जबकि गैर सरकारी विद्यालयों के 60% छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति उच्च पाई गई एवं 40% छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति निम्न पाई गई।

उद्देश्य-2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष:- शोध के इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बेगूसराय जिले के दो सरकारी विद्यालय से 30 छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति का अध्ययन किया गया तथा दो गैर सरकारी विद्यालयों से भी 30 छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति का अध्ययन किया गया । जिसमें सरकारी विद्यालयों के 40% छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति उच्च पाई गई तथा 60% छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति निम्न पाई गई। जबकि गैर सरकारी विद्यालयों के 50% छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति उच्च पाई गई एवं 50% छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति निम्न पाई गई।

उद्देश्य-3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
निष्कर्ष:- शोध के इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बेगूसराय जिले के दो सरकारी विद्यालय से 60 विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति का अध्ययन किया गया तथा दो गैर सरकारी विद्यालयों से भी 60 विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति का अध्ययन किया गया। जिसमें सरकारी विद्यालय के 55% विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति उच्च पाई गई तथा 45% विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति निम्न पाई गई एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के भी 55% विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति उच्च पाई गई तथा 45% विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की स्थिति निम्न पाई गई।

ISSN: 2347-2979

निष्कर्ष एवं सुझाव:-

इस शोध के अध्ययन के पश्चात प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से जो निष्कर्ष प्राप्त हुआ है उसका वर्णन इस प्रकार है:-

इस शोध के उद्देश्यों के आधार पर जो आंकड़े प्राप्त हुए उससे यह ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के केवल 30% छात्रों में ही अनुशासन की स्थिति सकारात्मक है किंतु 70% छात्रों में यह स्थिति संतोषजनक नहीं है तथा गैर सरकारी विद्यालयों में केवल 40% छात्रों में ही अनुशासन की स्थिति सकारात्मक है एवं 60% छात्रों में यह स्थिति नकारात्मक पाई गई। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा अनुशासन का स्तर अधिक संतोषजनक एवं सकारात्मक है।

इस शोध के उद्देश्यों से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के 40% छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति उच्च है तथा 60% छात्राओं में यह स्थिति निम्न पाई गई जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत इस स्तर के 50% छात्राओं में अनुशासन की स्थिति सकारात्मक एवं संतोषजनक पाई गई तथा 50% छात्राओं में यह स्थिति नकारात्मक पाई गई। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं में अनुशासनहीनता की स्थिति गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक एवं संतोषजनक है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मैं अनुशासन की स्थिति संतोषजनक नहीं है जिसके कारण इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में अनुशासन की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता अधिक है । विद्यालयों में अनुशासन की स्थिति में सुधार हेतु शिक्षा के प्रमुख घटक पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों से संबंधित विषयवस्तुओं का समावेश किया जाना चाहिए तथा शिक्षकों को इसके लिए कक्षा- कक्ष में जिन विद्यार्थियों के व्यवहार में अनुशासनपरकता परिलक्षित होती है उसे प्रोत्साहन देकर अन्य विद्यार्थियों को अपने व्यवहार में अनुशासन को समाहित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

संदर्भ सूची:-

1. शर्मा, आर० ए० (1995),- मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
2. भार्गव, उषा (2003), - किशोर मनोविज्ञान, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. पांडेय, रामशकल (2008), - धर्म, दर्शन और शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
4. गुप्ता, एस० पी० (2005), - सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. श्रीवास्तव, डी० एन० (2021), - सांख्यिकी एवं मापन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।